

भारत का राजपत्र



The Gazette of India

असाधारण EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड ३—उप-खण्ड (i) PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

४. ३८३] नई विलासी, सोमवार, जुलाई २०, १९८७/आषाढ़ २९, १९०९
No. 383] NEW DELHI. MONDAY, JULY 20, 1987/ASADHA 29, 1909

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या वी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के कप वे रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

प्रिया संवादसंग्रह

(यजस्त् विषाणु)

मई दिल्ली, 20 अगस्त, 1987

भ्रष्टाचार

182/87—केन्द्रीय उत्पाद शुल्क

सा. का. नि. 667 (अ) :—केन्द्रीय सरकार का यह समाधान ही गया है कि ऐसी प्रथा के अनुसार जो उत्तराध-शुल्क के उद्ग्रहण की वाबत (जिसके अंतर्गत उसका उद्ग्रहण न किया जाना भी है) केन्द्रीय उत्तराध-शुल्क द्वारा नमक प्रविस्तियम, 1944 (1944 का 1) की धारा 3 के अधीन साधारणतया प्रकलिप्त थी, उक्त अधिनियम की पहली प्रत्युष्मी, जैसी कि वह 28 फरवरी, 1986 के पूर्व विद्यमान थी, की मद से 23-क के अंतर्गत यहां वाले कांच और कांच की वस्तुओं पर भीर जिनका उपयोग उक्त मद से 23-क के अंतर्गत आने वाले

मन्य कांच और कांच की वस्तुओं के भागे विनिर्माण के लिए उत्पादन कारबाने में किया गया था, उत्पादन 1 मार्च, 1984 को प्रारंभ होने वाली और 6 मई, 1984 को समाप्त होने वाली अवधि के दौरान, केंद्र सरकार द्वारा, उक्त अवधि के दौरान, प्रधार्य उत्पाद-शुल्क की बाबत जारी की गई किसी अधिसूचना के अन्तिम, उक्त द्वारा 3 के अधीन उद्घोषित नहीं किया जा रहा था;

प्रीत ऐसे कांच और कांच की वस्तुओं पर विशेष उत्पाद-शुल्क की उपर्युक्त अवधि के दौरान ऐसे श के उद्घाटन की बाबत सुनिश्चित विधि के अधीन उद्घोषित नहीं किया जा रहा था;

अतः केंद्रीय सरकार, उक्त अधिसूचना की धारा 11-ए द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, निम्न देती है कि यदि उक्त प्रथा न होती, तो ऐसे कांच और कांच की वस्तुओं पर उक्त अधिसूचना के अधीन उक्त विधि के अधीन संदेश संपूर्ण उत्पाद शुल्क और विशेष उत्पाद शुल्क, ऐसे कांच और कांच की वस्तुओं पर उक्त संदर्भ किया जाना, अपेक्षित नहीं होगा जिस पर उक्त उत्पाद-शुल्क या विशेष उत्पाद-शुल्क, उक्त प्रथा अनुसार, उपर्युक्त भवाध के दौरान उद्घोषित नहीं किया जा रहा था।

[का.सं. 132/2/85-के.उ.ए.

एस.सी. जाना, अवर सर्व

MINISTRY OF FINANCE

New Delhi, the 20th July, 1987

NOTIFICATION

No. 187/87-CENTRAL EXCISES

G.S.R. 667(E).—Whereas the Central Government is satisfied that according to a practice that was generally prevalent regarding levy of duty excise (including non-levy thereof) under section 3 of the Central Excises & Salt Act, 1944 (1 of 1944), the duty of excise on glass and glassware, fall under Item No. 23A of the First Schedule to the said Act, as it existed prior to the 28th February, 1986 and used within the factory of production further manufacture of other glass and glassware, falling under the said Item No. 23A, was not being levied during the period commencing on the 1st March, 1984 and ending with the 6th May, 1984, under the said section read with any notification issued by the Central Government in relation to the duty of excise so chargeable during the said period;

And whereas the special duty of excise on such glass and glassware was also not being levied under the relevant law relating to the levy of such duty during the said period;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by section 11C of the said Act, the Central Government hereby directs that the whole of the duty of excise and the special duty of excise payable under the said Act or under the said law, on such glass and glassware, but for the said practice, shall not be required to be paid in respect of such glass and glassware on which the said duty of excise or the special duty of excise were not being levied during the period aforesaid, in accordance with the said practice.

[F. No. 132/2/85-CX.4]
S. C. JANA, Under Secy.

